विचार बिन्दु

लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रह कर ही काम कर सकता है। –सरदार पटेल

संवैधानिक व लोकतान्त्रिक आस्थाओं के तिरोहित होने का समय

देश के विभिन्न प्रदेशों में राज्यपाल और राज्य सरकार के बीच रार-तकरार के किस्सों से पिछली आधी सदी का इतिहास भरा पड़ा है। अनेकों बार यह सवाल उठाया जाता रहा है कि राज्यपाल संस्था की क्या कोई उपयोगिता भी है? संविधान के प्रावधान अनुसार कि वे राज्य मंत्रीमंडल की सलाह पर ही काम करेंगे का यदि अक्षरश: पालन किया जाय तो फिर उनके पास अपने विवेक से करने को क्या रह जाता है? संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा में स्पष्ट कहा था कि राज्यपालों के पास मंत्रिपरिषद के फैसलों को रद्द करने की शक्ति नहीं होगी। उन्होंने कहा था "पहली बात जो मैं सदन के ध्यान में लाना चाहता हूं वह यह है। संविधान के तहत राज्यपाल के पास कोई कार्य नहीं है जिसका वह स्वयं निर्वहन कर सकता है: कोई कार्य बिल्कुल नहीं...। तो क्या राज्यपाल केवल अलंकारिक पद है? यह भी सच है कि संविधान निर्माताओं ने राज्यपाल का पद निर्वाचित पद नहीं रखा। वह केंद्र सरकार की ओर से राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त व्यक्ति होता है। इस पद को निर्वाचित न बना कर नियुक्ति वाला बनाने के पीछे संविधान निर्माताओं की यही मंशा थी कि राज्यों में शक्ति या सत्ता के दो केंद्र न बन जाएं। उनके मन में कहीं यह जरूर रहा कि समाज में अनेकों ऐसे लोग हो सकते हैं जो सक्रिय राजनीति से कोई वास्ता न रखते हों और राजनीति की उठापटक से दूर अपने काम में लगे रहते हुए ऐसा कुछ करते रहते हों जिससे वृहद समाज समृद्ध होता है। ऐसे लोगों की चुनावी चौसर खेलने में कोई रुचि नहीं होती। ऐसे प्रबुद्ध लोगों के ज्ञान और अनुभव का लाभ शासन को मिले तो वैसे अनुभवी लोगों को राज्य प्रमुख के अलंकारयुक्त पद पर बिठाया जाय जिनकी रोज़मर्रा के शासन के काम-काज में तो कोई भूमिका न हो मगर उनकी उपस्थिती और उनका नैतिक नेतृत्व लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की राह प्रशस्त कर सके। संविधान निर्माता शायद मान कर चल रहे थे कि निर्वाचित प्रतिनिधि जो सदन में बहुमत के आधार पर सरकारें बनायेंगें वे तथा उनके प्रमुख लोकतान्त्रिक आदर्शों से सरोबार होंगे। परंतु समय के साथ संवैधानिक आदर्श स्थिति और व्यावहारिक राजनीति में दूरियां इतनी बढ़ती गई कि राज्यपाल और राज्य शासन के बीच विवाद अप्रीतिकर स्थितियां पैदा करने लगे। इन हालात को अब दक्षिण भारत के राज्यों में देखा जा रहा है। इसे कुछ समय पहले तक पश्चिम बंगाल में भी देखा था। राजस्थान में भी हम राज्यपाल और राज्य सरकार के बीच तनातनी के हालात देखते रहते हैं। हाल ही में हमने देखा राजस्थान विधानसभा की कार्यवाही आहूत करने में राज्यपाल की राजनीति को परास्त करने के लिए यहां सदन का एक सत्र पूरा होने पर उसके अनिश्चित काल के लिए सत्रावसान की कार्यवाही इसलिए नहीं की गई कि कहीं जरूरत पड़ने पर सदन के कार्यवाही आहूत करने से राज्यपाल बाधा न डाल दे। राज्य सरकार और राज्यपाल के बीच ऐसी आपसी पटखनियों की संविधान निर्माताओं ने सपने में भी कल्पना नहीं की होगी।

जब तक देश में एक ही पार्टी कांग्रेस का रुतबा और दबदबा बना रहा तब तक ऐसे हालत बनने की नौबत नहीं आई क्योंकि राज्यपाल और सरकारें एक ही राजनैतिक दल के होते थे। परंतु अब भारतीय लोकतंत्र में भाजपा के प्रतिष्ठापित होने और कांग्रेस द्वारा अपना खोया हुआ वैभव पुन: प्राप्त करने की जद्दोजहद के बीच राज्यपालों और राज्य सरकारों के बीच दंगल जैसे हालत बन गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा केंद्रीय मंत्रिमंडल की सिफ़ारिश पर की जाती है। राज्यपाल की नियुक्ति के सम्बन्ध में दो प्रकार की प्रथाएं बन गयी थीं कि किसी व्यक्ति को उस राज्य का राज्यपाल नहीं नियुक्त किया जाएगा, जिसका वह निवासी है तथा राज्यपाल की नियुक्ति से पहले सम्बन्धित राज्य के मुख्यमंत्री से विचार-विमर्श किया जाएगा। यह प्रथा 1967 तक तो चली लेकिन उस साल के चुनावों में जब कुछ राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ, तब दूसरी प्रथा को समाप्त कर दिया गया और मुख्यमंत्री से विचार विमर्श की बजाय सिर्फ सूचना दी जाने लगी। कांग्रेस के वैभव काल में ही राज्यपाल पद पर संविधान निर्माताओं की मंशा के विपरीत राजनैतिक आधार पर नियुक्तियां होने लगी जो बाद में स्थायी परंपरा ही बन गई। अपनी राजनीतिक पारी में बीत चुके या बाहर धकेल दिये राजनेता राज्यपाल नियुक्त होने लगे। उधर सरकारों में बैठे निर्वाचित प्रतिनिधि भी सिर्फ और सिर्फ अपनी कुर्सी के लिए हो गए जिसे बचाने के लिए वे अपने प्रतिद्वंदियों को समूल मिटा देने को आमादा नज़र आने लगे। ऐसे में राजनीति की चौसर की चालें राजभवन तक पहुंचने लगी तो इसमें क्या आश्चर्य है। जब केंद्र और राज्य में अलग-अलग दलों की सरकारें होती हैं तब यह दंगल भयानक हो जाता है। यह सब होता है आम जनता की बेहतरी उसके विकासके नाम पर। मगर यह विकास हमेशा दिवास्वप्न ही बना रहता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि राजनीति आज ज्यादातर ऐसे लोगों को आकर्षित करती है जिनमें सरपरस्त बनने का लालच होता है। ऐसा बनने के लिए राजनीति और आर्थिक संस्कृति में नीतिभ्रष्टता और कुटिलता जरूरी औज़ार होते हैं। ऐसी संस्कृति में सने राजनेता उस गरीब के प्रति असंवेदनशील होते हैं जिसके पास काम नहीं है और न दो जून रोटी का जुगाड़।ऐसे राजनेताओं ने जरूर सीख लिया है कि किस प्रकार अपनी लुभावनी बातों, सार्वजनिक वक्तव्यों तथा भाषणों से अपने असली रूप को छुपाये रखा जाय ताकि बहुसंख्यक मज़लूमों के वोट उन्हें मिल सकें और वे सत्ता में पहुंच कर अपना और अपनों का हित साध सकें। आज़ादी के बाद जिस तरह के लोकतान्त्रिक नेतृत्व, शासन और समाज की कल्पना हमारे संविधान निर्माताओं ने की थी उसको ध्वस्त होने में आज़ादी के बाद अधिक देर नहीं लगी। एक पूरे युग की भ्रष्ट सामंती व्यवस्था हमें विरासत में मिली थी जिसे बदल कर असली गणतंत्र की स्थापना की आज़ादी के बाद कोई कोशिश नहीं हुई। हम भारत के लोग उसे अपनी नियति मान कर स्वीकार करते चले गए। आजादी के अमृत काल के आते-आते राजसत्ता को निजी सत्ता की तरह इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति कम होने की बजाय बढ़ती ही गई है।

> **संविधान निर्माता शायद मान कर चल रहे थे कि निर्वाचित प्रतिनिधि जो सदन में बहुमत के आधार पर सरकारें बनायेंगें वे तथा उनके प्रमुख लोकतान्त्रिक आदर्शों से सरोबार होंगे। परंतु समय के साथ संवैधानिक आदर्श स्थिति और व्यावहारिक राजनीति में दूरियां इतनी बढ़ती गई कि राज्यपाल और राज्य शासन के बीच विवाद अप्रीतिकर स्थितियां पैदा करने लगे।**

आज़ादी के बाद हम भारत के लोग ऐसा राजनैतिक नेतृत्व नहीं खड़ा कर सके हैं जो प्रशासन तंत्र को देश के आम जन के प्रति संवेदनशील बना सके। वास्तव में इसका उल्टा ही हुआ। सत्ता में आना ही सबका लक्ष्य होचला है क्योंकि इससे उन्हें अपने और अपनों के हित साधने की ताकत मिलती है। सत्ता से बाहर रह गए सभी अगले चुनावों का इंतज़ार इसलिए नहीं करते कि उन्हें आम जन के लिए कुछ करना है बल्कि इसलिए करते हैं कि अब तक दूसरों ने अपना घर भरा अब उनकी बारी है। इसीलिए सत्ता में बैठे लोग भले ही वे किसी भी विचारधारा के हों प्रशासन तंत्र को तुष्ट करके चलते हैं। एक समय प्रतिबद्ध कार्यपालिका की वकालत की गई। वह मांग वैचारिक आधार पर थी। मगर तब से अब तक गंगा में मैल की न जाने कितनी धाराएं जा कर मिलती चली गई है। अब कार्यपालिका के लोग सच में प्रतिबद्ध होने लगे हैं। यह प्रतिबद्धता जनहित में वैचारिक स्तर पर नहीं होती बल्कि पूरी तरह शीर्ष राजनैतिक नेतृत्व दे रहे व्यक्ति के प्रति होती है। ऐसी हालत में राजनेता और नौकरशाहों के बीच गठबंधन बन जाता है। इसमें जाति की भूमिका भी जुड़ जाती है। एक ऐसी व्यवस्था बन जाती है जिसमें कानून और नियम सिर्फ राज में बैठे लोगों के लिए होते हैं। इस तंत्र में विधिवत बने कानून की नहीं सत्ता और तंत्र में बैठे लोगों की मर्जी की चलती है। राज्यपाल पद पर बैठे लोग भी इसके अपवाद नहीं रहे हैं। आकंठ राजनीति में डूबा कोई व्यक्ति जब इस संवैधानिक पद पर बिठाया जाता है तब उससे यह अपेक्षा करना व्यर्थ है कि वह अपना चरित्र बदल लेगा। राज्यपालों ने अब विश्वविद्यालयों के मामलों में अपनी सक्रिय भूमिका खोज ही ली है। राज्यपाल पद पर बैठा व्यक्ति राज्य के विश्वविद्यालयों का पदेन कुलाधिपति होता है और उसका विश्वविद्यालयों के रोजमर्रा के कामकाज में दखल आम हो चला है। कुलपतियों की नियुक्तियों में भी वह दखल देता है। इसी कारण अनेक दक्षिणी राज्यों में मुख्यपर्यात्रियों के साथ उनके संबंध इस हद तक बिगड़ गये हैं कि वहां कानून बदल कर राज्यपाल का विश्वविद्यालयों के काम में हस्तक्षेप को खत्म करने की नौबत आ गई है। इसीलिए यह यह सवाल फिर उठने लगा है कि राज्यों में राजभवनों की कोई जरूरत भी है?

वर्ष 1966 में केंद्र सरकार ने मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग का गठन किया गया था। उस आयोग ने अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि राज्यपाल के पद पर किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जाना चाहिये जो किसी दल विशेष से न जुड़ा हो। परंतु उस सिफारिश पर कभी कोई चर्चा ही नहीं की गई क्योंकि वह दलीय राजनीति को रास नहीं आई। मगर अब समय आ गया है कि राज्यपाल के कार्यालय से जुड़ी शक्तियां और उनके विशेषाधिकार की जवाबदेही निर्धारित हो तथा उनके कामकाज को पारदर्शी बनाया जाय। साथ ही राज्यपाल अपने दायित्वों का किस प्रकार उचित निर्वहन करें उसके लिये आमसहमति से 'आचार संहिता' विकसित की जानी चाहिये और राज्यपाल की विवेकाधीन शक्तियों पर अंकुश लगाया जाना ही श्रेयकर होगा।

–अतिथि संपादक
राजेंद्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

पांच सितारा जेल

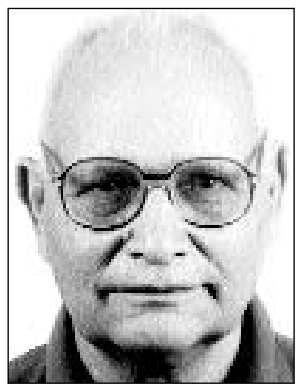

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

बेटी के पास अमेरिका आये हुए थे, उससे मिलने। उसके साथ कुछ दिन रहने। बिटिया शादी के बाद अमेरिका आ गई थी। कंवरसाब यहीं एक बड़ी आईटी कंपनी में कार्यरत थे। हम अमेरिका पहली बार आये थे। सच में तो विदेश ही पहली बार आये थे। बेटी का घर और रहन-सहन देख कर बड़ा अच्छा लगा। अपना आलीशान घर, कार, फ्रीज, वाशिंग मशीन, डिश वाशर, आधुनिक मोडयूलर किचन, बड़े स्क्रीन वाला कलर टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि आदि सब सुविधायें। हमारे लिए काफी कुछ नया और भव्य। उनकी आय अच्छी थी। अमरीकी जीवन शैली रास आ रही थी। सप्ताह के 5 दिन काम करना और वीक एण्ड पर एन्जोय करना, दोस्तों के साथ सैर-सपाटे, घूमना-फिरना, पिकनिक, पार्टी, पिक्चर। घूमों-फिरो, खाओ-पिओ, मौज-मस्ती करो। बिटिया भी काम करती थी। कार चलाती थी। वीक डेज पर हमें ले जाते। बड़े बड़े मॉल, बाजार, लाईब्रेरी, मैकडोनल्ड, आइसक्रीम पार्लर, ग्रोसरी शॉप, पिकनिक स्थल, रमणीय स्थान।

शाम को कंवरसाब घर लौटते ही चाय का प्याला ले, डाक देखते। फ्री कूपन और सेल आदि के नोटिस निकाल कर बताते और किस चीज के इन्स्टालमेण्ट ड्यू के नोटिस आये हैं अलग करते। कौन से इन्स्टालमेण्ट ड्यू हैं, कोई बड़ा इन्स्टालमेण्ट तो ड्यू नहीं, की चर्चा करते। मैंने पूछा तो बताया कि यहाँ सभी साधन, यहां तक कि फ्रीज और वाशिंग मशीन भी, लोन पर लेने की सुविधा है। ईजी मन्थली इन्स्टालमेण्ट में चुकाना होता है। पूरा चुकाने पर ही मालिकाना हक मिलता है, तब तक वह रेहन पर। उसे काम में लेने, भोगने का अधिकार आपका। बड़ा व्यवस्थित काम है। इन्स्टालमेण्ट समय पर नहीं चुकाओ तो वसूली करने वाले घर आकर सामान जब्त कर ले जायेंगे और आपको ब्लेकलिस्ट कर देंगे। हालांकि ऐसी नौबत नहीं आती। आप सचेत रहते हैं। सजग रहते हैं। ऐसा मौका कभी न आये। आप इसके लिए प्लान करते हैं। सुविधायें जुटाने और भोगने कि लिए यह आपके कार्य का अनिवार्य हिस्सा होता है, जीवनयापन का अंग।

यह भोग की संस्कृति है जिसे लोग सहर्ष अंगीकार करते हैं। ऋण चुकाना (डेट सर्विसिंग), खपना जीवनशैली का अंग। हर चीज की कीमत चुकानी होती है। सुख सुविधा भोगने के लिए इच्छाओं की दासता।

मुझे याद आता है गांव में एक सम्पन्न व्यक्ति के लिए किसी का कथन, "ओ क्यां को सेठ, ई को घर तो गिरवी पड्यो है।"

अमेरिका से लौट कर मैने एक कविता लिखी थी–

अमरीका में जिंदगी पांच सितारा जेल
सुख सुविधायें खूब हैं, लेकिन सभी उधार,
जीना भी रुजगार है, जीवन मुक्त बाजार,।
सुख सुविधा से पूर्ण सब, घर, मोटर, बाजार,
वातानकूलित बंद सब, कांच ढके, बेजार।
घर के दरवाजे खुले, सीधे कारों पास,
कारों भीतर जिंदगी, लंबा कारावास।
घर के बाहर कुदरती, यद्यपि खिली बहार,
बस खिड़की से देखलो, बंद कांच के पार।
सड़कें भी सुंदर बहुत, स्वच्छ नील आकाश,
वातानुकूलित कार में, छनी हवा का वास।
भौतिक सुख के दास सब, माया का सब खेल,
अमरीका में जिंदगी पांच सितारा जेल।

एक ओर अमरीका की उधार, भोग-विलास की संस्कृति, औवर सेनिटाइज्ड, रेजिमेंटेड जीवन शैली, और दूसरी ओर शेखावाटी, राजस्थान की बचत (थ्रिफ्ट) की संस्कृति और नैसर्गिक, स्वच्छन्द जीवन। क्या तुलना करें, वैसे अपनी-अपनी जगह सभी ठीक हैं, सुख के आधार अपने अपने। फर्क सुख की अवधारणा का है।

भौतिक सुख, सुख का आधार सुविधायें, अमारीकी जीवन शैली का कोई मुकाबला नहीं। हमें भी कुछ दिन बड़ा अच्छा लगता है, उनके सुख में भागीदार हो कर। बच्चों पर गर्व मिश्रित आनन्द। फिर अकेलापन हावी हो जाता है, अपने नीड़ में लौटने की छटपाटाहट तारी हो जाती है। अधिक सुख मिलता है जब बच्चे यहां आते हैं, पारिवारिक जश्न का आनन्द, सुख।

– डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

(17 नवंबर - मानगढ़ धाम शहादत दिवस)

मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं किया जाना आश्चर्यजनक

पन्नालाल मेघवाल

- **शहादत के सौ वर्ष 17 नवंबर 2012 को पूर्ण होने पर राज्य सरकार ने यहां शताब्दी समारोह का आयोजन किया**

देश को अंग्रेजी शासन, जागीरदारों एवं जमींदारों के अत्याचारों से आजादी दिलाने के लिए संत गोविंद गुरु ने 17 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर आदिवासी भगतों की सत्संग सभा आयोजित की थी। इस सभा पर अंग्रेजी फौज ने बंदूकों से अंधाधुंध गोलियां बरसाई जिससे लगभग 1500 आदिवासी भगत शहीद हो गए थे।

मानगढ़ पहाड़ी जनसंहार के 6 वर्ष बाद 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में एक शांति सभा पर ब्रिगेडियर जनरल डायर ने अंग्रेजी फौज से बरबस गोलियां चलवाईं जिससे लगभग 750 निर्दोष लोग शहीद हो गए थे। मानगढ़ पहाड़ी आदिवासियों का जनसंहार जलियांवाला बाग जनसंहार से अधिक बड़ा, वीभत्स और बर्बर था लेकिन आश्चर्य यह है कि केंद्र सरकार द्वारा जलियांवाला बाग को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया लेकिन मानगढ़ धाम को अभी तक राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं किया गया है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मानगढ़ धाम पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करने व सीएम गहलोत के कार्यक्रम में उपस्थित रहकर मानगढ़ धाम को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की मांग के बाद भी मानगढ़ धाम राष्ट्रीय स्मारक घोषित नहीं हुआ, यह आश्चर्यजनक है।

आदिवासी जिले डूंगरपुर के बांसिया (बेडसा) गांव में 30 दिसंबर 1858 को बनजारा जाति में जन्मे गोविंद गुरु ने किशोरावस्था से आदिवासी भील समाज में सुधार आंदोलन की अलख जगाई। आदिवासी भीलों एवं मीणों की बिखरी हुई भोली किंतु पिछड़ी जनता को संगठित कर गोविंद गुरु ने स्वामी दयानंद सरस्वती के संपर्क में स्वदेशी मंत्र की दीक्षा लेकर, उन्हीं के उपदेशों और विचारों से प्रेरित होकर 1883 में संप सभा की स्थापना की।

संप सभा के माध्यम से गोविंद गुरु आदिवासी भील समाज में भक्ति भाव एवं देश प्रेम का जज्बा फैलाते। गोविंद गुरु से आदिवासी भील समाज इतना प्रभावित हुआ कि उनका हर शब्द उनके लिए अलिखित कानून बनने लगा। गोविंद गुरु के सुधारवादी आदिवासी भील अनुयाई भगत कहलाने लगे। लेकिन दुर्भाग्य से इस संगठन को अंग्रेजों ने विद्रोहियों का समूह समझा।

राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के इलाकों के बीच अवस्थित मानगढ़ पहाड़ी पर गोविंद गुरु ने सन् 1903 में मेले की शुरुआत की। संप सभा के तत्वावधान में लाखों की संख्या में लोग मेले में जुटते तथा समाज सुधार कार्यों का लेखा-जोखा करते थे। इन्हीं मेलों की श्रृंखला में 17 नवंबर 1913 को मगसर पूनम मेले में लाखों आदिवासी भील भगत जमा हुए थे।

कर्नल शटन के आदेश पर अहमदाबाद, बड़ौदा एवं गोधरा से बुलाई गई फौजों ने मानगढ़ पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया। यह फौज बंदूकों, तोपों और मशीनगनों से लैस थी। मानगढ़ मेले में संप सभा को गोविंद गुरु संबोधित कर रहे थे। अचानक कर्नल शटन ने फायर का आदेश दिया। बंदूकों, तोपों और मशीनगनों से उगलती आग ने आदिवासी भगत भीलों को भून दिया। महज पन्द्रह बीस मिनट के इस तूफान में मानगढ़ पहाड़ी लाशों से पट गई। इस गोलीकांड में लगभग डेढ़ हजार आदिवासी भील भगत मारे गए तथा हजारों घायल हुए।

गोविंद गुरु के पांव में गोली लगी, वे अंग्रेजों की हुकूमत की इस बर्बरता को देखकर फूट-फूटकर रो पड़े। सैनिकों ने उन्हें बंदी बना लिया तथा अहमदाबाद की सेंट्रल जेल में ले गए। अंग्रेजों तथा उनके दरबारी राजाओं ने गोविंद गुरु पर अलग आदिवासी भील राज्य बनाने के षड्यंत्र का आरोप लगाया। उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। उनके प्रमुख साथी पूंजा धीरजी भगत को आजीवन कारावास की सजा हुई। कुरिया भगत को भी सजा हुई। अहमदाबाद जेल में अच्छे चलन तथा विनम्रता के कारण गोविंद गुरु की फांसी रोक दी।

दस वर्ष के कारावास के बाद उन्हें जेल से तो रिहा किया लेकिन राजस्थान आने पर रोक लगा दी। गोविंद गुरु ने जेल से छूटकर पहले जालोद और बाद में कंबाई में जाकर भील चेतना का काम जारी रखा और 30 अक्टूबर 1931 को इस दुनिया से विदा हो गए। मानगढ़ पहाड़ी पर बना स्मारक गोविंद गुरु तथा अनाम शहीदों की स्मृति को जिंदा रखे हुए हैं। मानगढ़ की पवित्र धूणी पर मार्गशीर्ष की पूर्णिमा पर विशाल मेला भरता है। यहां लोग गोविंद गुरु की धूणी पर हवन और भजन कीर्तन कर उन्हें नमन करते हैं।मानगढ़ पहाड़ी शहादत के सौ वर्ष 17 नवंबर 2012 को पूर्ण होने पर राज्य सरकार ने यहां शताब्दी समारोह का आयोजन किया। इस बलिदान में शहीद हुए सभी आदिवासी भगतों को श्रद्धांजलि एवं शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र चढ़ाकर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

कम बारिश से इस बार प्रदेश में ग्वार की फसल की कम हुई पैदावार

एक करोड़ बोरी ग्वार होने की उम्मीद थी लेकिन 75 लाख बोरी ही उत्पादन हुआ

बीकानेर, (कासं)। अगस्त और सितंबर में कम बारिश होने के कारण इस बार प्रदेश में ग्वार की फसल कमजोर हुई है। फसल कमजोर होने से पिछले 10 दिनों से ग्वार के भावों में 700 रुपए क्विंटल और गम में 2000 रुपए क्विंटल की तेजी आ गई। सोमवार को ग्वार के भावों में 300 रुपए क्विंटल की तेजी आई। भाव बढ़ते देख किसानों ने ग्वार की फसल बाजार में लानी कम कर दी है।

आमतौर पर इन दिनों मंडी में एक लाख बोरी ग्वार की आवक होती है लेकिन पिछले 10 दिनों में मंडी में 50 से 52 हजार बोरी ही आ रही है। व्यापारी बाबूलाल सारस्वत का कहना है कि अरब और यूरोपीय देशों में लगातार बढ़ रही डिमांड के कारण भाव बढ़ रहे हैं। विदित रहे कि भारत से 80 प्रतिशत ग्वार और उससे जुड़े उत्पाद यूरोपीय देशों के अलावा सऊदी अरब, रूस, अमेरिकी देशों में भेजा जाता है। पाकिस्तान और सूडान से भी 20 प्रतिशत ग्वार इन देशों में जाता है लेकिन इस वहां बारिश कम होने से वहां से ग्वार नहीं भेजा जा रहा। इसलिए ग्वार के भावों में तेजी आई है। इस बार मंडी में अब तक 15 लाख बोरी ग्वार की आवक हो चुकी है। दीपावली के बाद जैसे ही इसके भाव बढ़ने शुरू हुए किसानों ने फसल को लाना कम कर दिया। अब प्रतिदिन 50 हजार तक बोरी आ रही है।

हिण्डौन जिला अस्पताल में एक बैड पर तीन मरीज

हिण्डौन सिटी (निस)। बारिश का दौर खत्म होने के बाद मौसमी बीमारियां थमने का नाम नही ले रही। जिला चिकित्सालय में वायरल बुखार की लैब में कुल 20 मरीज डेंगू के होने की पुष्टि हो चुकी। फिर भी शहर के जलभराव क्षेत्रों में नगर परिषद द्वारा मच्छर निरोधी दवाओं का छिड़काव भी नहीं किया जा रहा है।

शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों से जिला चिकित्सालय में मरीजों की प्रतिदिन ओपीडी 2500 पहुंच चुकी है। प्रमुख चिकित्सा अधिकारी पुष्पेंद्र गुप्ता ने बताया कि चिकित्सकालय में भर्ती होने वाली मरीजों की संख्या भी बढ़ने से वार्डों की स्थिति बदतर बनी हुई। एक वार्ड में 23 बैड पर 60 से ज्यादा भर्ती मरीजों का उपचार चल रहा है। जिला चिकित्सालय के शिशु वार्ड में स्थिति बदतर बनी हुई है। पलंग पर जगह नही मिलने पर परिजन जमीन पर शिशु रोगियों का उपचार करा रहे है। लैब जांच में प्रतिदिन 300 से अधिक मरीजों की ब्लड जांच हो रही है। वहीं लैब में मरीजों की जांच के सैंपल लेने की अवधि सुबह 9 से 12 बजे तक होने से कई मरीज बिना जांच के ही लौट रहे हैं ।

कब होगा "मैगा हाइवे" का निर्माण?

- **ब्यावर -मसूदा सड़क मार्ग को लेकर ग्रामीणों में रोष**

मसूदा, (निसं)। ब्यावर -मसूदा सड़क मार्ग को लेकर ग्रामीणों में रोष है । ग्रामीणों ने बताया कि सत्ता में आने के पहले राजनेता, पूर्व सरकार व उनके जनप्रतिनिधियों पर जमकर हमला करते हैं चुनाव के वक्त बयानबाज़ी कर सरकार पर हमला बोल देते है । मगर जैसे ही खुद की सरकार बनी सारे वादे भूल जाते है। जब कभी जनता के बीच जाते है तो खोखले आश्वासन देकर सम्मान सहित निकल जाते हैं । भोलीभाली जनता वादों में लिपटी जाती है । ग्रामीण सलीम ,इस्माईल सहित दर्जनों ग्रामीणों ने कहा कि मसूदा क्षेत्र के ग्रामीणों में छतिग्रस्त सड़क को लेकर आक्रोश है। ग्रामीणों ने बताया कि प्रदेश में शासित कांग्रेस की सरकार भले ही नयी -नयी योजनाएँ लाकर घोषणाएं कर रही है, लेकिन जनता को मूल आवश्यकता के तौर पर सड़क, पानी ,बिज़ली शिक्षा, और चिकित्सा ही चाहिए । कांग्रेस के नेताजी भले ही मोटे -मोटे कसीदे गढ रहे हो लेकिन इन दिनों मसूदा से ब्यावर व बान्दनवाडा सड़क के मौजूदा हाल देखकर हर कोई सरकार और यहां के शासन -प्रशासन पर उंगली उठाने में कसर नहीं छोड़ रहा है । कई सालो से इस सड़क मार्ग का नवीनीकरण न होना, ऐसे में इस सड़क मार्ग से गुजरने वाला हर व्यक्ति यहां के स्थानीय नेताओंऔर राजस्थान सरकार को कोसते है कि न जाने कब इस सड़क का निर्माण होगा।

इस सड़क की यात्रा करने वाले लोग बताते है कि इस सड़क की हालत गांव के खेतों मे जाने हेतु बनी हुई ग्रेवल रोड से भी बदतर है, यहां दुपहिया वाहनों का आना -जाना किसी गंभीर मुसीबत को मौल लेने से कम नहीं है। ऐसी स्थिति में भी इस सड़क कि सुध लेने वाला कोई नहीं है, बड़े वाहन, छोटे वाहन सब के लिए ये मार्ग मुसीबत बना हुआ है ।

आमजन ने बताया कि इस सड़क की स्वीकृति मुख्यमंत्री बजट घोषणा में जारी हो चुकी, टेंडर प्रक्रिया भी प्रारम्भ कर दी गई मगर अब तक मौके पर कोई काम चालू नहीं हुआ। ऐसे में आम जन का बार -बार यही सवाल होता है कि आखिर कब तक यही हालात रहेंगे, कब काम चालू होगा, कब सरकार व जनप्रतिनिधियों एवं शासन और प्रशासन की नजरें इस पर पड़ेगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 नवम्बर, 2022

मार्गशीष मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, आश्लेषा नक्षत्र सांय 6:59 तक, ब्रह्म योग रात्रि 1:07 तक, बालव करण सांय 6:53 तक, चन्द्रमा सांय 6:59 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृष, बुध-वृश्चिक, गुरू-मीन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज मार्गशीर्ष संक्रांति, सूर्य वृश्चिक सांय 7:15 से प्रवेश करेगा। पूण्य काल दिन 12:51 से आरम्भ होगा। महापात योग दिन 1:35 से रात्रि 7:20 तक है। आज श्री काल भैरवाष्टमी, कालाष्टमी है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:31 तक, शुभ 10:51 से 12:11 तक, चर 2:52 से 4:12 तक, लाभ 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:51, सूर्यास्त 5:32

मेष
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी और अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता और योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।